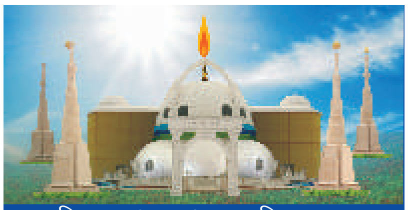

विश्व का प्रथम समभाव-समदृष्टि का स्कूल
(शीघ्र खुलने जा रहा है)

"विचार ईश्वर आप नूं मान, अव विचार ईश्वर इक जान"

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ

सतयुग-सत्य का स्वर्ण युग तेजी से निकट आ रहा है

समभाव-समदृष्टि सतयुग का संविधान है

यह परिवर्तन अवश्यम्भावी है, आइए और इस परिवर्तन का अभिन्न अंग बनिए.......

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी की प्रार्थना

धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज, सब तों श्रेष्ठ, सब तों विद्वान, सब तों गुणवान, सब तों बलवान, सब तों धनवान, सब तों बुद्धिमान, सारी दुनियां विचों ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूं चरणों पर सीस मेरी कोट कोट प्रणाम।

श्री रघुनाथ जी की प्रार्थना

आद् पुरुष, निरंकार, ज्योति स्वरूप, पारब्रह्म परमेश्वर, भक्त वत्सल श्री रघुनाथ जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूं चरणों पर सीस मेरी कोट कोट प्रणाम।

समभाव समस्त प्राणियों के हृदय में प्रबल होगा

महामन्त्र

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

श्री साजन वन्दना

हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम। सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥

शंख - चक्र - गदा - पद्मधारी। ये दर्शन है बड़ा महान॥
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम। सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥

न जप न तप न भजन-बन्दगी होगी। एक अवस्था होगी जगत जहान॥
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम। सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥

सतयुग में सतज़बान होगी। एक दृष्टि एकता होगी महान॥
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम। सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥

कुदरती कला से सब उपजेगा। दिव्य दृष्टि होगी महान॥
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम। सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥

एक दृष्टि और एक ही दर्शन होगा। होगी युवा अवस्था महान॥
हे श्री साजन तुम्हें प्रणाम। सतयुग दर्शन तुम्हें प्रणाम॥

यह तो सर्वविदित ही है कि कुदरत ने समयकाल को चार युगों में बाँट रखा है, ये हैं सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। अब जो समयकाल चल रहा है वह है कलियुग। कुदरत के नियमानुसार इस युग के बाद 'सतयुग'-स्वर्णयुग का आना सुनिश्चित है इसलिए इस सत्य के प्रति जागरूक हो हम सबका आने वाले स्वर्णयुग की योग्यता को धारण करना अनिवार्य है ताकि हम स्वयं को तदनुरूप ढालने में समर्थ हो सकें।

इस सन्दर्भ में सतयुग व कलियुग के प्राणियों में मूलभूत अन्तर यह होता है कि सतयुग के सजनों का चरित्र पूर्णतः आध्यात्मवाद, सत्य एवं आत्मज्ञान पर आधारित होता है जो उनके विचारों को सदैव पवित्रतम अवस्था में बनाए रखने में सहायक सिद्ध होता है। अन्य शब्दों में समभाव व समदृष्टि के अनुशीलन में दृढ़ता ही उनके चरित्र का मूल आधार होती है।जबकि इसके विपरीत मानवीय मूल्यों के प्रति वचनबद्धता के स्तर में ह्रास के कारण कलियुग के सजनों का चरित्र पूर्णतया भौतिकवाद अर्थात् ''मैं और मेरा'' पर आधारित होता है जो कि संसार में फैली प्रत्येक बुराई का मूल कारण है। यह मस्तिष्क को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि में फँसा देता है। इस प्रकार स्वार्थपरता और नकारात्मक विचार जीवन-यापन का उद्देश्य व आधार बन जाते हैं। यह हमारी अन्तर्निहित दिव्य-दृष्टि को कमज़ोर बनाता है और व्यक्ति कभी भी जीव व ब्रह्म के शाश्वत सम्बन्ध के प्रति जागरूक नहीं हो पाता।

इस प्रकार इंसान का मन-मस्तिष्क पराश्रित हो ईश्वर को स्वयं से अलग कहीं और मानने लगता है। फलतः ईश्वर की खोज में भक्ति के अनेकानेक प्रकारों का आविष्कार होना आरम्भ हो जाता है और इस प्रकार मनुष्य विषादग्रस्त हो रोते-झुखते हुए जीवन व्यतीत करता है। ऐसे वातावरण में मानव के लिए अपनी इंद्रियों की पवित्रता व परमेश्वर से एकता बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। जान लो कि यह सब नैतिकता व समभाव के सिद्धान्तों के उल्लंघन के कारण होता है क्योंकि हम यह भूल जाते हैं कि हम किसी अन्य को नहीं बल्कि स्वयं को ही मार रहें हैं, गाली दे रहें हैं, बुराई कर रहें हैं, धोखा या नुकसान पहुँचा रहे हैं।

जब यह दुर्दशा अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँच जाती है तब मातृ प्रकृति अपने महत्त्वपूर्ण आगामी चरण अर्थात् निष्कलंक-निर्मल-सतयुग में प्रवेश हेतु उत्पन्न दुर्दशा को परिष्कृत कर समस्त कष्टों का निवारण करती है। इसलिए परमात्मा के निकट आने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह मानवीय मूल्यों के मूलाधार को भली-भाँति समझे विशेषतः सबसे सरल व प्रभावी समभाव-समदृष्टि के अनुशीलन को दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाए। जान लो कि यह न केवल जीवन के प्रमुख उद्देश्य सत्य आत्मज्ञान की प्राप्ति हेतु आवश्यक है अपितु पृथ्वी को यथार्थ रूप में शांतमय बनाने के लिए भी अनिवार्य है।

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ समभाव-समदृष्टि द्वारा पृथ्वी पर वास्तविक शांति और सतयुग लाने हेतु अग्रदूत है।

समभाव हर परिस्थिति में अपने मन-मस्तिष्क को संतुलित अवस्था में बनाए रखने की शक्ति है तथा समदृष्टि सबको सम या समान दृष्टि से देखने की अवस्था की द्योतक है। जान लो कि जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आज के युग में प्रचलित भक्ति के विभिन्न प्रकारों में समभाव-समदृष्टि के अनुशासन का अनुशीलन सर्वश्रेष्ठ एवं सुगम माध्यम है। ये दोनों ईश्वर की मूल प्रकृति को प्रदर्शित करते हैं और समृद्धि, समता एवं शान्ति के साधन हैं।

समभाव एवं समदृष्टि का ज्ञान प्राप्त करने से व्यक्ति को अपने 'शाश्वत् निज' के श्रवण की (सुनने की) बुद्धिमत्ता प्राप्त होती है, परिणामस्वरूप ईश्वरीय आदेश या आज्ञा के प्रति वचनबद्धता के बल की प्राप्ति होती है और 'वास्तविक निज' के गुणों को आत्मसात् कर उन्हें प्रसारित करने की क्षमता उत्पन्न होती है। ऐसा व्यक्ति इस अनुभव के प्रत्यक्ष ज्ञान से ओतप्रोत हो विद्यमान समस्त चराचर प्राणियों की समता के प्रति स्वयं को समर्पित कर देता है। इस प्रकार वह 'निज' के पूर्ण ज्ञान को प्राप्त कर लेता है और उसका मन-मस्तिष्क अनन्त ज्ञान के उस स्तर तक पहुँच जाता है अर्थात् उस दिव्य अवस्था को पा लेता है जहाँ पहुँच कर उसे भूत, वर्तमान व भविष्य का परिज्ञान सहज ही हो जाता है। यही नहीं इस विवेकशीलता द्वारा उसे इस तथ्य का भी ज्ञान हो जाता है कि उसका 'शाश्वत निज' ही सब जगह प्रत्यक्ष है और उसे सर्वत्र उसी 'निज' की झलक ही नज़र आती है।

हम कह सकते हैं कि इसके निरन्तर अभ्यास से, वह ऐसी अवस्था को पा लेता है जहाँ उसे इस वास्तविकता का ज्ञान होता है कि न जन्म है न मरण, न रोग है न

सोग, न खुशी है न ग़मी, न ग़रीबी है न अमीरी। यह ज्ञान उसे असीम, धनाड्य तथा सबसे ज्ञानी व सजन पुरुष बना देता है। इस प्रकार वह उस असीम, अलौकिक आनंदमय अवस्था को पा लेता है जहाँ उसे सर्वत्र सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ भगवान का दर्शन होता है।

यह सत्य सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णित किया गया है कि सतयुग में नेकनीयती व समान दृष्टिकोण से सम्पन्न प्रत्येक सजन सत्य का प्रेमी होगा तथा समरसता से शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करने के योग्य होगा। यह पवित्र ग्रन्थ हम सबके लिए मार्गदर्शक शक्ति है।

इस पवित्र ग्रन्थ के अनुसार, समभाव एवं समदृष्टि इस प्रकार से वर्णित की जा सकती है:-

'सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म धारण कर मन-वचन-कर्म को स्वतन्त्र अवस्था में साधे रखना है तात्पर्य है कि नकारात्मकता से विमुक्त हो ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रति दृढ़ विश्वास रखते हुए जनचर-बनचर, जड़-चेतन में एक निगाह एक दृष्टि रखनी है।'

समभाव एवं समदृष्टि के अनुशीलन करने हेतु आवश्यक विशेषताएं

1. मन-वचन व कर्म को पवित्र एवं स्वतन्त्र अवस्था में साधे रखने के लिए अर्थात् हर प्रकार के विकारों से मुक्त तथा मन-मस्तिष्क को अफुर रखने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी सत्ता का आधार इस ब्रह्माण्ड के दिव्य स्रोत ईश्वर को बनाएँ तथा उसके दिव्य आदेशों के प्रति वचनबद्धता में स्थिर बने रहें।

2. बचपन से ही समभाव एवं समदृष्टि का अनुशीलन करने के लिए दृढ़ हो जाएं तथा मन, वचन व कर्म से ईश्वरीय संविधान अनुसार कार्य करना सुनियोजित करें। याद रखो इसका मूल सिद्धान्त है एक दृष्टि-एक दर्शन।

3. 'विचार ईश्वर आप नूं मान, अव विचार ईश्वर इक जान'। इस यथार्थ को सदैव याद रखें।

4. 'शब्द है गुरु, शरीर नहीं है' अर्थात् किसी व्यक्ति के चित्र, मूर्ति या आकृति का ध्यान या उपासना न करें अपितु शब्द को ही अपना गुरु मानें।

5. सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म तथा इनसे जुड़े अन्य दिव्य गुणों को दृढ़ता से धारण करें।

6. इस सत्य को स्वीकारें कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ है।

7. यह स्वीकारें कि हम सभी समान हैं तथा हमारा मन-मस्तिष्क सभी प्रकार के भेद-भावों व द्वैत भावों अर्थात् जात-पात, रंग-भेद, धर्म, नस्ल, अमीरी-ग़रीबी इत्यादि से परे है।

8. ईश्वरीय गुण धारण करने तथा जीवन की प्रत्येक अवस्था में स्वयं को संतुलित एवं सम अवस्था में बनाए रखने हेतु अपने व्यवहार, आचरण, आदतों व जीवन-शैली को बदलें।

सतयुग दर्शन ट्रस्ट के विषय में

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि०), महाबीर सत्संग सभा का एक विस्तारित रूपान्तरण है, जिसकी स्थापना अविभाजित भारत के छोटे से कस्बे गोजरा मण्डी जिला लायलपुर (पाकिस्तान) में हुई। मानव जाति को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक पीड़ा से छुटकारा दिलाने हेतु इसका पंजीकरण एक पब्लिक ट्रस्ट के रूप में दिनाँक 12 जुलाई 1995 को हुआ। आज ट्रस्ट समय-समय पर हर संभव यत्न द्वारा अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मानव जाति में आध्यात्मिक जागरूकता, भाईचारे एवं प्यार का संचार करने हेतु निरंतर प्रयत्नशील है।

36 एकड़ क्षेत्र में फैला सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) का 'सतयुग दर्शन वसुन्धरा' नामक परिसर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के नज़दीक फ़रीदाबाद में भूपानी-लालपुर रोड पर स्थित है। यह ओल्ड फरीदाबाद चौक, मथुरा रोड से लगभग 9 कि.मी. मीटर दूर है।

पाठकों की जानकारी हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित समभाव-समदृष्टि के अनुशीलन पर आधारित सत्संग का आयोजन प्रत्येक रविवार वसुन्धरा में होता है। इसकी रिकॉर्डिंग्स हमारी वेबसाइट http://www.satyugdarshantrust.org/satsang_audio.htm. पर भी उपलब्ध हैं। पाठक इन रिकॉर्डिंग्स को सुनकर

उनसे भी लाभान्वित हो सकते हैं।

ट्रस्ट द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में की जा रही अनेकानेक गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:-

1. समाज के कमज़ोर व जरूरतमन्द वर्ग के लिए 14 डिस्पेन्सरियों का कुशलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। इनके माध्यम से अब तक लगभग 10 लाख से भी अधिक व्यक्ति लाभान्वित हो चुके हैं।

2. समाज में विशुद्ध संगीत की महत्ता के प्रसार हेतु 14 संगीत कला केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है।

3. भारत के कई हिस्सों में नियमित रूप से निःशुल्क चिकित्सा-शिविर एवं धर्मार्थ वितरण का आयोजन किया जाता है।

4. भावी शिक्षकों को आदर्श एवं शिक्षण के क्षेत्र में दक्ष बनाने हेतु महिलाओं के बी.एड. कॉलेज का कुशलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है।

5. ट्रस्ट द्वारा समय-समय पर ज़रूरतमन्द व्यक्तियों को राशन, कपड़े व वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसी के साथ ज़रूरतमंद युवाओं के विवाह भी यहाँ आयोजित किए जाते हैं।

6. ट्रस्ट द्वारा परिवार की एकता और व्यक्तिगत उन्नति के लिए समय-समय पर शैक्षणिक, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा उच्चस्तर के आत्मविश्वास, नैतिक मूल्यों, सामाजिक रीति व सदाचार को विकसित करने का यथेष्ट प्रयत्न किया जाता है।

सबकी जानकारी हेतु ट्रस्ट द्वारा किए जाने वाले ये विभिन्न क्रियाकलाप पूर्णतया उदारतापूर्वक दी गई दान राशि व निष्काम सेवा पर आधारित हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रयत्नों द्वारा सजनों को समाज में व्याप्त दुःखों को निःस्वार्थ सेवा द्वारा दूर करने के उद्देश्य से मन, वचन व कर्म से पूर्णतया शुद्ध और सांसारिक कर्त्तव्यों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करने योग्य बनाया जा रहा है।

ट्रस्ट को दी जाने वाली सहयोग राशि भारत सरकार के आयकर अधिनियम की धारा 80-G के अधीन करमुक्त है।

समभाव एवं समदृष्टि के अनुशीलन में दक्ष बनाने हेतु सतयुग दर्शन विद्यालय के विद्यार्थियों को बाल्यावस्था से ही निम्नलिखित प्रयत्नों द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है :-

1. नैतिक मूल्यों पर विचार विमर्श करके उन्हें निष्कामता व परोपकार जैसे महान ईश्वरीय गुणो को धारण करने व स्वयं को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बचाने का परामर्श दिया जाता है।

2. इस विद्यालय में स्कूल के हाउसेज़ का नाम संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म रखा गया है। विद्यालय में संपूर्ण वर्ष इन्हीं महत्त्वपूर्ण सद्गुणों पर आधारित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि इनके माध्यम से बच्चे इन सद्गुणों के महत्त्व को संपूर्णतया समझ कर जीवन में आत्मसात् कर सकें।

3. व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास (शारीरिक, मानसिक, आत्मिक) हेतु उनमें आत्मविश्वास व वचनबद्धता जैसे गुणों का विकास करने का प्रयास किया जाता है ताकि वे एक आदर्श व्यक्ति बनने हेतु मन, वचन व कर्म की पवित्रता आजीवन साधे रख सकें। इस प्रकार सत्यनिष्ठा व प्रभावपूर्ण ढंग से उन्हें जीवन के समस्त कर्त्तव्यों को कुशलता से संपादित करने के साथ-साथ जीवन-लक्ष्य को पाने के प्रति भी प्रेरित किया जाता है।

4. शारीरिक मानसिक स्वस्थता के लिए पौष्टिक, संतुलित व शाकाहारी सात्विक आहार के सेवन पर बल दिया जाता है।

समभाव दी होसवे फ़तह

अधिक जानकारी के लिए, संपर्क करें
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
'वसुंधरा', ग्राम भोपानी, लालपुर रोड, फरीदाबाद – 121002 (हरियाणा)
दूरभाषः 0129 2202316/820/821 Ext. 504/510
मोबाइलः 09811016239, 09811066127
इमेलः info@satyugdarshantrust.org वेबसाइटः www.satyugdarshantrust.org
© Satyug Darshan Trust (Regd.)

उपरोक्त लेख टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली के विशेष परिशिष्ट 'द स्पीकिंग ट्री' में दि.13 जून 2010 को पृष्ठ 3 में प्रकाशित लेख का हिन्दी भाषान्तर है।